'भक्त कवयित्री मीराँ': नाम संदर्भ और विभिन्न मत

डॉ. मनीष श्रीमाली

भक्ति आंदोलन की प्रमुख महिला संतों में मीराँ का नाम अग्रणी है। जोधपुर के संस्थापक राव जोधा के परिवार में जन्मी तथा मेवाड़ नरेश राणा सांगा की पुत्रवधू होने के उपरान्त मीराँ ने स्वयं को भौतिक जीवन से परे रखते हुए स्वयं को कृष्ण भक्ति में समर्पित कर दिया था। मीराँ ने राजसी ठाठ-बाट के मध्य रहते हुए कृष्ण की जिस माधुर्य भाव से भक्ति की परंपरा को स्थापित किया, उसने उसे समकालीन भक्ति धाराओं से पृथक एवं भिन्न स्थान प्रदान किया। यही वजह है कि मीराँ की गणना विश्व के प्रमुख संतों में की जाती है। यह विडम्बना ही है कि मीराँ से सम्बद्ध अपार साहित्य होने के उपरान्त भी उनके जीवन की प्रामाणिक जानकारी देने वाला ऐतिहासिक ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। यही कारण है कि मीराँ का संपूर्ण जीवन अर्थात् जन्म से लेकर मृत्यु तक एकमत इतिहास नहीं मिलता है। वही दूसरी ओर धार्मिक चरित्र आख्यानों में मीराँ सर्वत्र दिखाई पड़ती है। यह उनकी प्रसिद्धि ही थी कि तत्कालीन धार्मिक अख्यानों में तो उनके जीवन के सौ-पचास वर्षों में ही उन्हे स्थान मिल गया था। नाभादास के भक्तमाला में संक्षिप्त उल्लेख के बाद लगभग सभी भक्तमालों में उनका उल्लेख मिलता है। मीराँ का उल्लेख भविष्यपुराण में भी आता है।[1] प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य मीराँ के नाम से जुड़े विभिन्न मत एवं मान्यताओं पर आलोचनात्मक दृष्टि से विचार कर एक सामान्य मत प्रस्तुत करना है।

14वीं तथा 15वीं शताब्दी के लगभग उत्तर भारत में एक धार्मिक हलचल महसूस की जा रही थी, जिसका सीधा संबंध दक्षिण भारत में हुए बदलावों से था। भारतीय इतिहास और सांस्कृतिक जीवन में यहीं आंदोलन भक्ति-आंदोलन के नाम से जाना जाता है।[2] इस आंदोलन ने संतों के एक नए वर्ग को जन्म दिया। इनमें कबीर, मीराँबाई, तुलसीदास, सूरदास, दादू आदि के नाम प्रमुख हैं। इन्होंने स्थानीय भाषा में साहित्य की रचना कर जन-जन में भक्ति आंदोलन की अलख जगाने का कार्य किया था। कबीर दास जी के शब्दों में स्थानीय भाषा बहती नदी है, जो गंगा के समान सभी के लिए उपयोगी है।[3]

मीराँबाई का परिचय

मीराँबाई राठौड़ क्षत्रियों की मेड़तिया शाखा के संस्थापक राव दूदा की पौत्री थी। राव दूदा जोधपुर राज्य के शासक राव जोधा के पुत्र थे। मीराँ के पिता रतनसिंह थे, जो खानवा के युद्ध में सांगा की तरफसे युद्ध में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे[4] तथा

मीराँबाई की माता सुरतानसिंह झाला की पुत्री वीरकुंवरी थी।[5] मेड़तिया राठौड़ों की राजकुंवरी होने के कारण ही मीराँबाई को 'मीराँ मेड़तणी' भी कहा जाता है। मीराँ की प्रारम्भिक शिक्षा राव दूदा द्वारा नियुक्त पंडित गजाधर राय की देखरेख में संपन्न हुई, इन्हें मीराँ ने व्यास की उपाधि प्रदान की थी।[6]

भक्ति संतों की परम्परा में मीराँ का नाम न केवल राजस्थान अपितु भारत की प्रमुख महिला संतों में से एक है। मीराँ ने कृष्ण भक्ति के उन उच्चतम आदर्शों को प्राप्त कर लिया था जहां कोई विरले ही पहुँच पाते है। अत: विभिन्न विद्वानों ने मीराँ को विभिन्न उपमाओं से सुशोभित किया है। भक्तमाला के रचयिता नाभादास के अनुसार वह एक गोपिका सदृश है। कहीं उसकी तुलना रामतीर्थ से की गई है तो कहीं दक्षिण की कवयित्री आण्डाल से की गई है। किसी ने उसकी तुलना यूनान की कवयित्री सैफों से की है। डॉ. हर्मन तो मीराँ की तुलना ईसा मसीह से ही कर बैठे है।[7] यहाँ तक कि प्रो. कल्याणसिंह शेखावत का मानना है कि मीराँ एक अद्वितीय महिला थी, जिसके समकक्ष कोई महिला किसी देश में किसी भाषा के साहित्य में उपलब्ध नहीं है।[8]

मीराँबाई से संबंधित विवाद

उपर्युक्त तथ्य यह सिद्ध करने को पर्याप्त है कि मीराँ एक विश्व प्रसिद्ध व्यक्तित्व थी। किंतु दुर्भाग्यवश मीराँ से संबंधित अपार साहित्य मौजूद होते हुए भी वह आज इतिहास की एक उलझी पहली बनी हुई है। मीराँ के जन्म, नाम, स्वर्गवास, चरित्र, सामाजिक सम्पर्क व जीवन की प्रमुख घटनाएँ आदि को लेकर अभी तक विवाद बना हुआ है। जैसे मीराँ का जन्म कब हुआ– इस संबंध में गौरीशंकर हीराचंद ओझा, हरविलास शारदा, डॉ. गोपीनाथ शर्मा आदि विद्वान सन् 1498 ई. को मीराँ के जन्म वर्ष के रूप में स्वीकार करते है, जबकि डॉ. सी.एल. प्रभात, डॉ. हुकुमसिंह भाटी आदि ने मीराँ का जन्म ई. सन् 1504 माना है वहीं श्री वियोगी हरि एवं के.एम. मुंशी ने मीराँ का जन्म ई. सन् 1500 माना है।[9] इसी प्रकार मीराँ के विवाह को लेकर भी विवाद है। कुछ विद्वानों का मानना है कि मीराँ का विवाह कुम्भा से हुआ था। इस भाम्रक तथ्य को जन्म देने वाले थे कर्नल जेम्स टॉड।[10] इस संबंध में राजेंद्र शंकर भट्ट का मानना है कि टॉड ने किसी नए तथ्य का आविष्कार नहीं किया होगा अपितु जनश्रुतियों पर विश्वास करने एवं मीराँबाई की रचनाओं पर संगीताचार्य कुंभा के प्रभाव को देखकर ऐसा विश्वास कर लिया होगा।[11] प्रसिद्ध इतिहासकार गौरीशंकर हीराचन्द ओझा[12] एवं श्यामलदास[13] आदि विद्वान मीराँबाई को कुंभा की रानी के रूप में अस्वीकार करते है तथा मीराँबाई का विवाह राणा सांगा के

पुत्र भोजराज से 1516 ई. में संपन्न होना बताते हैं।

मीराँबाई के नाम से जुड़े विभिन्न मत

प्रस्तुत शोध-पत्र का संबंध उपर्युक्त विवाद से न होकर के मीराँबाई के नाम से संबंधित विवाद पर प्रकाश डालना है। मीराँ के जीवन से जुड़ी घटनाओं को लेकर जिस प्रकार विवाद है, उसी प्रकार उनके नाम को लेकर भी विद्वानों में मतभेद है। 'मीराँबाई' का शब्दार्थ क्या है ? क्या यह शब्द उपनाम है ? और मीराँ शब्द की व्युत्पत्ति और शुद्ध रूप क्या है ? जैसे प्रश्नों को उठाने वाले प्रारंभिक विद्वानों में डॉ. पीताम्बर दत्त बड़थवाल थे। डॉ. बड़थवाल के अनुसार 'मीराँबाई' शब्द संत कबीर के अनुयायियों द्वारा दिया गया है। जिसका शाब्दिक अर्थ 'ईश्वर की पत्नी' बताया है। उनका कहना है कि 'मीराँ' शब्द, सर्वप्रथम कबीर की रचनाओं में आया है और वह सर्वत्र ईश्वर वाचक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। उक्त कथन के संबंध में डॉ. बड़थवाल कबीर के कुछ दोहे प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत भी करते है।[14]

अ. *कबीर चल्या जाइ था, आगै मिल्या खुदाइ।*
मीरां मुझसौं यौ कह्या, किनि फुरमाई गाइ।।

ख. *हज काबै हूवै हूवै गया, केती बार कबीर।*
मीराँ मुझमे क्या खत, मुखाँ न बोलै पीर।।

ग. *कहूँ कबीर न दर करेजे मीरा, राम नाम लगि उतरे तीरा।*

उसी प्रकार 'बाई' शब्द का प्रयोग पत्नी के लिए होता है और मीराँबाई ने अपनी रचनाओं में 'मेरो पति सोई' आदि का संकेत भी दिया है। अतएव संतों ने उन्हें मीराँबाई नाम दे डाला और उनका मूल नाम सदा के लिए विस्मृत हो गया। जब उपर्युक्त कथन का विश्लेषण करते है तो जान पड़ता है कि कबीर व दादू की रचना में आये 'मीराँ' शब्द को किसी भी रूप में ईश्वर के लिए प्रयुक्त व्यक्तिवाचक संज्ञा नहीं मान सकते और न ही वह शब्द किसी भाषा में ईश्वर के लिए प्रयुक्त होता है। 'बाई' शब्द का अर्थ भी, राजस्थानी परंपरा के अनुसार, कन्या या किसी आदरणीय महिला ही हो सकता है; पत्नी नहीं हो सकता। इस प्रकार उक्त धारणा मीराँ के संबंध में सही प्रतीत नहीं होती है।[15]

मीराँ के नाम को लेकर एक अन्य कथा प्रचलित है, जिसके प्रवर्त्तक प्रसिद्ध विद्वान पुरोहित हरिनारायण जी है। उनके अनुसार मीराँ के जन्म से पूर्व रत्नसिंह एवं वीरकुंवरी के गोपाल नामक पुत्र हुआ जो जन्म के कुछ समय बाद ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। संतान हेतु चिंतित मीराँबाई के माता-पिता किसी के सुझाव पर मनौती करने हेतु अजमेर के

सूफी संत मीरां शाह की दरगाह पर गए (ये ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के बहन के पुत्र थे)। मीरां शाह के आशीर्वाद से उन्हें पुत्री की प्राप्ति हुई जिस वजह से उसका नाम 'मीराँबाई' रखा गया।[16] फिर भी इस धारणा को पुष्ट करने वाला कोई ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं है, जिससे उपर्युक्त कथन सिद्ध किया जा सकें। कुछ विद्वानों में इस बात को लेकर भी विवाद है कि मीराँ शुद्ध भारतीय शब्द नहीं है, वहीं कुछ साहित्यकारों का मत है कि यह विशुद्ध भारतीय शब्द है। सबसे पहले डॉ. बड़थवाल ने 'मीराँ' शब्द की उत्पत्ति 'मीर' शब्द से होना बतलाया है। इस तरह उन्होंने 'मीराँ' को निर्गुणवादियों की श्रेणी में सम्मिलित करने का प्रयत्न भी किया है। किन्तु चंद्रबली पाण्डेय तथा ललिता प्रसाद उन विद्वानों में से हैं, जिन्होंने 'मीराँ' नाम को पूरी तरह संस्कृत परंपरा से जोड़कर देखा। उन्होंने 'मीराँ' शब्द को 'सागर कन्या' का अर्थ देते हुए 'लक्ष्मी' से संबद्ध किया। 'मीराँ' अर्थात् समुद्र से उत्पन्न होने वाली लक्ष्मी।[17] इसी प्रकार महावीर सिंह गहलोत संस्कृत के 'मीर' शब्द का अर्थ सागर से लेकर उसका प्रयोग महान् के अर्थ में करते हैं फिर भी उक्त शब्द संस्कृत-साहित्य में प्रचलित नहीं है, जो इसकी प्रमाणिकता पर प्रश्न-चिह्न लगाता है।[18]

उपर्युक्त क्रम में आगे बढ़ने पर 'मीराँ' के नाम में एक और विवाद सामने आता है कि 'मीराँ' शब्द में 'रा' सानुनासिक (राँ) है या निरनुनासिक मात्र (रा) है। उनका वास्तविक नाम क्या है? मीराबाई या मीराँबाई ? इस प्रश्न के औचित्य पर विचार करते हुए डॉ. सी.एल. प्रभात ने 'मीरा: जीवन और काव्य, द्वितीय खंड में लिखा है कि ''एक बिन्दी के अन्तर से मीरा और मीराँ शब्द दो भिन्न दार्शनिक साधनात्मक और सांस्कृतिक परम्पराओं की ओर मुड़ जाते हैं।'' डॉ. प्रभात का मत है कि शुद्ध शब्द मीरा है, सानुनासिक शब्द 'मीराँ' नहीं। 'मीरा' और 'बाई' दोनों भारोपीय भाषा के शब्द है। मीरा शब्द संस्कृत के मीर से बना है जिसका अर्थ है 'सागर का अंश'।[19] डॉ. बड़थवाल ने 'मीराँ' शब्द का निकटतर संबंध फारसी भाषा के 'मीर' शब्द से जोड़ा है तथा उनका मानना है कि मीरा के प्रति आदर-प्रदर्शन के लिए बहुवचन के सूचक राजस्थानी 'आँ' प्रत्यय लगा दिया गया जिससे वह 'मीराँ' हो गया, इसका अर्थ स्वामी या मालिक है। पुरोहित हरिनारायण ने भी सानुनासिक 'मीराँ' के स्थान पर निरनुनासिक 'मीरा' के प्रयोग को 'मीराँबाई' के लिए अपमानजनक माना है।[20] किंतु ये सारे तर्क भी किसी अंतिम निष्कर्ष तक पहुँचाने में असफल रहे हैं। इसी क्रम में कई और मत भी जुड़ गए है, जिसमें श्री नरोत्तमदास स्वामी ने प्राकृत व अपभ्रंश के व्याकरणों की सहायता से 'मीराँ' का मूल 'बीरा' सिद्ध करने की चेष्टा की किंतु 'बीरा' राजस्थानी में भाई को कहते हैं।[21] इसी प्रकार के विचार स्वामी आनंद

स्वरूप ने भी रखे है वे कहते है कि जन्म के समय बालिका के अपूर्व तेजोमय मुखमंडल को देखकर उसका नाम 'मिहिराँ बाई- मीरांबाई (मिहिर-सूर्य) रखा गया।[22]

उपर्युक्त तर्कों को देखने पर यहीं प्रतीत होता है कि 'मीराँ' एक अस्वाभाविक नाम है, जो पूर्व में प्रचलित नहीं था। यहीं कारण था कि इस नाम की व्युत्पत्ति एवं अर्थ को लेकर विद्वानों ने भिन्न-भिन्न मतों का प्रतिपादन किया है। इस संबंध में सर्वाधिक युक्तिसंगत मत प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. गोपीनाथ शर्मा का प्रतीत होता है, जिसका समर्थन डॉ. मंजू चतुर्वेदी ने राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित 'मीराँ' मोनोग्राफ में भी किया है।[23] गोपीनाथ शर्मा का मानना है कि 'मीरा' एक विशुद्ध स्थानीय नाम है साथ ही यह राजपूत परम्परा के अनुरूप है। मालदेव की एक लड़की का नाम भी मीरा था जिसका विवाह बागड़ के राजकुमार से हुआ था। राजस्थान में राजपूतों में विशेष रूप से ऐसे नाम दिये जाते थे जिनका संबंध परिचित वस्तुओं से हो तथा तत्समय में एक अन्य विशेषता थी कि उस युग में पश्चिमी राजस्थान के राजपरिवारों में नामकरण खेती से संबंधित शब्दों पर किये जाते थे। उदहारणार्थ, आस्थान के पुत्र का नाम हैडक (बैल) था, चुण्डा की स्त्री का नाम इन्दी (काँटे वाली फाटक), सातल की पत्नी का नाम फूला (भुना हुआ मक्का), गंगा की स्त्री का नाम जेबड़ा (रस्सी) आदि रखे गये थे। इन्हीं उदाहरणों के अनुकूल मीरा 'मेरे' से संबंधित नाम है। मेर खड़ी फसल को कहते हैं। मीरा के परिवार का संबंध खेती से था एवं पश्चिमी राजस्थान में अच्छी फसल होना खुशहाल जमाने का सूचक भी था। अत: उपर्युक्त तर्कों से मेर से मीरा नाम की उत्पत्ति होना संभव प्रतीत होता है।[24]

यहां नाम के संदर्भ में हमें पूर्व प्रचलित मान्यताओं को दृष्टिगत करना होगा। जहां 'वाचक्नवी गार्गी' को यह नाम उसके पिता वाचक्नु गर्ग के नाम से मिला था। राजा जनक की पुत्री 'जानकी' कहलायी। राजा द्रुपद की पुत्री होने से उनकी पुत्री का नाम 'द्रोपदी' पड़ा। उपर्युक्त तथ्य यह मान्यता स्थापित करते हैं कि पिता के नाम से पुत्री का नामकरण हो रहा था। दूसरा, क्षेत्र अर्थात् स्थान विशेष के नाम से भी वह जानी जाती थी, जैसे - पांचाल प्रदेश से संबंध रखने के कारण द्रोपदी 'पांचाली' कहलायी। वहीं विदेह के राजा होने के कारण जनक की पुत्री 'वैदेही' के नाम से भी जानी गयी। कृषि की महता ही थी कि राजा जनक द्वारा हल चलाते हुए जब बच्ची मिली तो उसका नाम उस हल से बनी रेखा के नाम पर ही 'सीता' रखा गया। इसी प्रकार कुंभ कलश से महाराणा कुंभकर्ण नाम रखा गया। इसी प्रकार से किसी अपशुकन एवं बच्चे की सेहत को ध्यान में रखते हुए उसके लोकाचार से अलग हटकर अशुचित नाम रखने की परंपरा लोकमानस में दिखायी पड़ती है। इसी का

एक उदाहरण महाराणा प्रताप के पुत्र का नाम कचरो[25] मिलता है, बाद में जिसके वंशज कचरावत कहलाये। अत: मीरा नाम भी अरबी या सूफी परंपरा पर आधारित न होकर के क्षेत्रीय कृषि परंपरा से प्रभावित ही प्रतीत होता है।

निष्कर्षत: उपलब्ध मतों और तर्कों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मीराँ/मीरा के नाम को लेकर विद्वानों में गहरा मतभेद रहा है, किंतु अब तक कोई मत पूर्णत: निर्णायक सिद्ध नहीं हो पाया। कबीर-पंथ, सूफी प्रभाव, संस्कृत व्युत्पत्ति अथवा फारसी स्रोत से नाम की उत्पत्ति के प्रयास प्रामाणिक आधार के अभाव में कमजोर प्रतीत होते हैं। इसके विपरीत डॉ. गोपीनाथ शर्मा का यह मत अधिक युक्तिसंगत है कि 'मीरा' एक विशुद्ध स्थानीय, राजपूत एवं कृषि-परंपरा से जुड़ा नाम है। पश्चिमी राजस्थान की नामकरण परंपराओं, सामाजिक संदर्भों और कृषि-आधारित लोकमानस को देखते हुए 'मेर' से 'मीरा' की उत्पत्ति सर्वाधिक संगत और ऐतिहासिक रूप से स्वीकार्य प्रतीत होती है।

संदर्भ

1. माधव हाड़ा, *पचरंग चोला पहर सखी री,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 11
2. हरिश्चंद वर्मा, *मध्यकालीन भारत,* भाग 1, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2009, पृ. 437
3. एस.एम. पांडेय एवं नार्मन जाइड, 'मीराबाई एण्ड हर कॉन्ट्रिब्यूशन टू द भक्ति मूवमेंट', *हिस्ट्री ऑफ रिलीजियन्स,* द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, खण्ड 5, अंक 1, 1965, पृ. 54
4. श्यामलदास, *वीर विनोद,* महाराणा मेवाड़ हिस्टोरिकल पब्लिकेशन ट्रस्ट, उदयपुर, 2007, भाग 2, पृ. 2
5. आनंद स्वरूप स्वामी, *मीराँ सुधा-सिंधु,* मीराँ प्रकाशन समिति, भीलवाड़ा, वि.सं. 2014. पृ. 5
6. कल्याणसिंह शेखावत, *मीराँबाई की प्रामाणिक जीवनी,* नवभारत प्रकाशन, जोधपुर, 2009, पृ. 23
7. हर्मन गोएट्ज, *मीरां बाई: हर लाइफ एण्ड टाइम्स,* भारतीय विद्या भवन, मुंबई, 2013, पृ. 3
8. कल्याणसिंह शेखावत, *मीराँबाई की प्रामाणिक जीवनी,* पृ. 3
9. वही, पृ. 17
10. जेम्स टॉड, *एनल्स एण्ड एण्टिक्यूटीज ऑफ राजस्थान,* अनु. कालूराम शर्मा,

श्याम प्रकाशन, जयपुर, 2013, पृ. 143

11. राजेन्द्र शंकर भट्ट, *महाराणा कुंभा,* नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली, 2011, पृ. 207
12. गौरीशंकर हीराचंद ओझा, *उदयपुर राज्य का इतिहास,* राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2015, भाग-1, पृ. 314
13. श्यामलदास, *वीर विनोद,* भाग-2, पृ. 2
14. जितेन्द्र कुमार जैन, (संपा.) *मीरां बृहत्पदावली,* भाग 2, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1975, भूमिका, पृ. 51
15. परशुराम चतुर्वेदी, *मीराँबाई की पदावलियां,* हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ. 75-76
16. *मीरां बृहत्पदावली,* भाग-1, (संपा.) फतहसिंह, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1967, भूमिका, पृ. 2; श्यामसिंह राणावत एण्ड कृष्णगोपाल शर्मा, *हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफराजस्थान,* सेंटर ऑफराजस्थान स्टडीज, जयपुर, 2004, पृ. 381
17. नन्द चतुर्वेदी, *मीराँ संचयन,* वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 8
18. परशुराम चतुर्वेदी, *मीराँबाई की पदावलियां,* पृ. 76
19. नन्द चतुर्वेदी, *मीराँ संचयन,* पृ. 7
20. परशुराम चतुर्वेदी, *मीराँबाई की पदावलियां,* पृ. 76
21. गोपीनाथ शर्मा, *राजस्थान का इतिहास,* शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, पृ. 380
22. *मीराँ सुधा-सिन्धु,* पृ. 5
23. नंद चतुर्वेदी, *मीराँ संचयन,* पृ. 8
24. गोपीनाथ शर्मा, *राजस्थान का इतिहास,* शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, पृ. 410
25. देवीलाल पालीवाल, गिरीश नाथ माथुर, (संपा.) *मेवाड़ के राजाओं की राणियों, कुंवरों और कुंवरिओं का हाल,* साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर, 1985, पृ. 13

सहायक आचार्य, इतिहास विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)